

कूटारिषिः ॐ नमस्तस्मै नमः ॥ सत्यं नमस्तस्मै नमः ॥ सत्यं नमस्तस्मै नमः ॥ ० ॥
 अध्यायः ॥ वा विवदं गत्यादि ॥ लावना ॥ अध्यायः ॥ विवदं गत्यादि ॥ ० ॥
 यविमामिमां नृपं सत्यं नमस्तस्मै नमः ॥ निष्ठावजायामिता लालकविवि
 श्या ॥ वदविद्यया अगारिषिः कूटारिषिः ॥ ममिवृद्धं वजाशिषकं ८४ ॥ तत्स
 र्वं वदनां ॥ गुरुवदं सत्यं नमस्तस्मै नमः ॥ वजाशिषकं ॥ ० ॥ अध्यायः ॥
 वा विवदं गत्यादि ॥ लावना ॥ अध्यायः ॥ विवदं गत्यादि ॥ ० ॥

अध्यायः नमस्तस्मै

ASIA ARCHIVES

2717

दिग्-पुत्रा

सगनयत्रिवासान् श्रावयथ ॥ डंयमायस्यादा ॥ मडा ॥ दक्षिणाम
दिवा नूटं नीवेलेकु विक्रमं दलुदमं यमधारे पुनाधियमदधि
की ॥ गस्य दधिविवागाव पुश्रीकं विनय ॥ विगव नू मदावीर्त व
जा कृष्णधुधविर्त्ति ॥ डंयुह नक सवैइ सु यमात्रिसयत्रिवासान् कील
य २ हू २ ८ ॥ पं ४ ला ० धं ४ मु ० ॥ २ ॥ डं व नू लादि सगनयत्रिवासा
न हसक धय ॥ डं व नू मयस्यादा ॥ मडा ॥ पश्चिमघ व क नानूटं स

फरुनाविशु विगंनानागया धधवं ॥ डंयुह नू लादि सगनयत्रिवासान् कील
दधेनविनासाय पुमान् क विनय ॥ वक व नू वेमदा सीमं यमान
कंदलुधविर्त्ति ॥ डंयुह नक सवैइ सु व नू मयत्रिवासान् कीलय
२ हू २ ८ ॥ पं ४ ला ० धं ४ मु ० ॥ ३ ॥ डं व नू लादि सगनयत्रिवासान् कील
कयय ॥ डं व नू लायस्यादा ॥ मडा ॥ ड क ले गु व ग नू टं यी व नू
धनाधियं न कू लि वी ज प व क यकाधियमदधिकी व र्त्ति दधेना

गाय विद्याककविचिन्त्यगनीलवल्गुमहावीरं विष्णुकलिसेवलयनः
॥ ८ ॥ विद्याककसर्वदृष्टगलयेतिकुर्वलान् साकषसयप्रिवागानकीलयर
हंरुट् ॥ यं ४ लायं ४ रु ॥ ७ ॥ ४ ॥ अद्यादिसगलपविवागान् साकषकेयन
उअगेनेस्वादा ॥ म ॥ अत्रिकानेपुय्यगलं नकु रुसचधविनं १८
लुनककमलुपुधनं तजाविमिददिकं तषादय्यविनासायकाधभव
विरावयन ॥ नीलवल्गुमहाधारं स्वमे यल्लगवाविनि ॥ ८ ॥ म ॥

सर्वदृष्टगनीलवल्गुमहावीरं विष्णुकलिसेवलयनः
॥ ८ ॥ विद्याककसर्वदृष्टगलयेतिकुर्वलान् साकषसयप्रिवागानकीलयर
हंरुट् ॥ यं ४ लायं ४ रु ॥ ७ ॥ ४ ॥ अद्यादिसगलपविवागान् साकषकेयन
उअगेनेस्वादा ॥ म ॥ अत्रिकानेपुय्यगलं नकु रुसचधविनं १८
लुनककमलुपुधनं तजाविमिददिकं तषादय्यविनासायकाधभव
विरावयन ॥ नीलवल्गुमहाधारं स्वमे यल्लगवाविनि ॥ ८ ॥ म ॥

[illegible][illegible]

तवर्णमहाकालं वक्राशयनधर्मविगुणं डंडुं वक्रवर्तुवर्तिमूर्ध्वद्वयः
 न्याकैपिनामदानायविवातानकीलयरुद्ररुद्र ॥ ४ ॥ लाः ४ ॥ धः ४ ॥ मुः ४ ॥
 २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियादिसंगस्यविवातनक्षत्रकर्मधर्म ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियादिसंगस्य
 ४ ॥ नागस्यः स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सनस्यः स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सर्वदिगक्षकयाज्ञागस्य
 ४ ॥ स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियासंवासादि स्वस्ववर्णयधविवातनक्षत्रा
 नावाधियतिदवान् महावलयवाकुमां गवां दक्षिणविनाभयसूक्त

शरीरविक्रयन ॥ नीलवर्णमहाकाशं वक्राशयनधर्मविगुणं डंडुं मकराक
 सर्वद्वय एधीनागस्यनक्षत्रकीलयरुद्ररुद्र ॥ ४ ॥ लाः ४ ॥ धः ४ ॥ मुः ४ ॥ १० ॥
 ० ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियादिसंगस्यविवातनक्षत्रकर्मधर्म ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियादिसंगस्य
 ४ ॥ नागस्यः स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सनस्यः स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ सर्वदिगक्षकयाज्ञागस्य
 ४ ॥ स्वादा ॥ ३ ॥ ४ ॥ धियासंवासादि स्वस्ववर्णयधविवातनक्षत्रा
 नावाधियतिदवान् महावलयवाकुमां गवां दक्षिणविनाभयसूक्त

३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥

दूति विधर्जन दधवलि श्रुय ॥ दधया गायन श्रुय गान वृत्त स्याः
 न वाङ्मादि न लसास्य ईका य ॥ कामात्री पूजा श्रुय स ग्नत विय
 समया वद ॥ करं क श्रुय ॥ म कूट पूजा गगन वक्र या य म न ज्ञा
 वलि श्रुय करं क श्रुय ॥ धावा वलि विय उ थ रु वा द्रु य र्क
 म क न ज्ञाय ॥ मा क सि धि विका य दान म धा श्रु धि वा विय ॥
 ॥ ॐ गि श्रु वा धे नू य या वि धि स मा य ॥ ७ ॥ धुरु म सु ॥

स म न यो नि म क नो पू जा ॥

उं न मा व द्वा य ॥ नि म क न पू जा वि धन मा द ॥ ७ वा र्ण गु न म लु ल म लु ल
 धि न वि धर्जन लख वलि श्रुय ॥ वा द्रु य पू जा श्रुय ॥ शि स मा धि क ल धा धि
 वा धन द व पू जा वि धि धा धु नि धू न दा व ॥ द्वा ज मा न म् दा द्रु य य क न य
 द व द्रु य म न द व या द्रु व न द्रा दा व ॥ म लु ल धि ल क स्था न वा य क
 मु नि य द य द व य ७ व स दि व क् गा य श्रु ग स्था न स दि न न द्रा थ द्रु ल
 य य क री न रा द व क न रा रु ग व नू धी व म् धा गु वा गी ध ध म् म ज न म सु

न तामनुयाम्यदं नाथ सुम्यत्वा वियाम्यदं गदशच्छिथकल्लुनया
वधमिधुवागीठ्यन जनश्चनयाप्रविश्यावयात निमनुनायाहाध
मीनमस्तत्रयाका वृद्धोत्पादं व सत्त्वानां समुदायसर्वगवृद्धयोड
त्यायाक सत्त्वदाक ज्ञमाज्ञान ड त्यागयायमरुयं कं गकं छ मनुयः
नगयाया समवासगृहिगध पूजायवानसपिलुयार्ग यावन्त्ययः
गिराकाळमनुयपर्यदं यो जयमेवांदाष्टसु पूजायादिनयीनुयाः

उदाहृतयमनात्रा तावदमित्युपयुक्त्य स्थागु महमिमायुगं समं
द्यावापिसत्वादिचत्वा नाद्ययपुर्वदानाथगमा डं सथापिगयाड
तावच्छयादं न उक्तमनयाडन चनयात्र समं घवापिसत्त्व दे सादिनूत्र
कुदियात्राया यत्रिताप्रसदिगन विष्णुसायुधानेनयया तासं वाने
मावाप्त यावत्यायगलमंरुष्टवजयित्वा अन्यात्रैरुसातिध्वकं नूः
सुदुया गधवाकीनायं विष्णुद्रव्य चनयं तावत्त गनसादिगयाडम

वृणासविरुममस्य समस्तविष्णुचक्र दूदू रिक्क धावनलक दूचक
उयासक लाचिमतगुन दूनयायस्य (मस्योनस॥ धाव (वकस्य) ह्या
देस्यामाद्यदधनथागतापगुनिनागकगुयादधिउदयनकाविष्णु
पुसन्नइय लाचिगथागत दूनयायकपाधनायाका॥ धनस्मानयासव
नहावकसाधनमुनियदयगक्रमायनममलुलविषजडा॥ रगवानाह
॥ रगवकनम्रासिकविनासाधूसाधूमहावाहा महापुन्यवलागमः

मधंनयमहावाहादू महाडरुमयस्थदूनयायइना॥ यूर्ध्वलापिगवी
ऊरु॥ दूनयूर्ध्वऊमियायं ल्धयापूसाधरुतयाइ धूमवियसानडत्या
मिइना॥ सरुलजानि लाधियत दूनकायसदू ले इ वधइले धीधर्म
धारुवागीध्वननआसिकविना॥ अथसगधगनवाकासिपुसानिधायपु
नधमगसवाकसिपुस दूकाव॥ ॥ पुन॥ ४॥ अथ दीपुमानयं लोपाहना
यागागुपितविदुन इवमागानया पाधनायाग दूदू डवसावमनसा

दृष्ट्वा सिरसा वचसा गथा पथ्या कवाया जानूयां दक्षायां नूयं
 गनाम उद्योगा वचनियान नूयुतन् मिश्रान कयावन वचननूया
 लिनियान यथनयान लादागनयान या नागुलिसत्रिपुनयार्थनाया
 हाधर्क विष्णुस्युसन्तुयमात्र ॥ धनददाव ददाव धकादिमण्डल
 थिरक स्नानगन सद्यनगयक दक्षुत्तयुजा आसिद्धिद रुमायना
 कथा विष्णुसद सलुलपागा द्वाये वलिस्त्रय धानिधूनदाव सानिद

पूजितन धानिधूनदाव समयावकु मृद्व (छायेन धानि निमकुनय
 जाविधिसेय साफ ॥ ॥ ८६ नमः दीपकं वाय ॥ ॥ यद्गुरुदनिमकु
 नयुजावनयागा कृष्णयुजा ३१ गाय श्रुत बक्षसृक प्रक्षेपगत्
 नीनीसेव पयग्वर कसत्रिमरा देवपूजा धूये दीपनेवद्य दक्षुत्तम
 लुलथिले स्नानगने जवपुनिवसदिवकाव हाधका नयवदानमा
 मथसा मारुगवन्दीयक वायुध धर्मा राजनसमुवना वासनयाद

यद्गुरुदनिमकुनय ॥

नाथसंभ्य कला बीजया मयदं ॥ दृष्टी भवन्त्येव यथात्र दीर्घक वयुश्च जन
 दनयात्र विष्णो वक यानि मिहिन निमकुना यो दा धर्मा राजानमस्मात्प्रया
 हा ॥ वृक्षाद्या दं वसुधा ना सम त्या य सद्यगे ॥ वृद्ध या इत्या या क सह लो दा
 द्यो अमादा क न ड त्या न यो य मरु य के ॥ का छ म लु य न गयी यो म म वा
 स ए दि ग यो पू जा प हा व स वि लु प ग या व त्या य द्दि मि ॥ का छ म लु प य
 द क्ष या ॥ ऊ ध म वा दा द्दि से द्दा क स पू जा आ दिन पि लु पा य दा हा व य

मधुनात्र नावन्ते द्दि स्मिन् यत्र यत्थ ल्ला गु म हा सि सां य नं ॥ स सं द्या वा वि
 रि क् स लो दि वे ला त्री क्ष य व र्ष दा न् ॥ थ व ना ऊ द्दि स धा पि म या द ग व द्द्य न
 न क म न यो द न द्द न या व स स द्द्य वा वि स ल् आ दिन व गु दि ग स वी द्द्य
 ना जा या म य वि वा र स दि ग न ना व स र्वा न स मा वा स या व त्या य ग ल् स
 द ॥ व द्द यि ला अ वा वि क् सानि ध्य क नू ॥ स द्दु यो ग थ द्दा को वि अ
 द्द न ग व न प् न व र ग न या द स दि ग न या द भ व ता स वि रु म व स्यो स म

सुविष्णुवर्कन हादि शक्तिरुचयोरस्यं गव्यालसु भुव नवृषु ग्या
दस्यां मागद्युधं तथा गता गुति नगमक ग्यादसि उदयनहा वि
क्रादन पुनन शय हादि तथा गत रुचयोरसक योर्थनायाय श्वर्ग
निमलु पूजा स्नानगर्भ आसिद्धिदि नखय अर्थविय लू ताठ वा मग
रु लाकदिवा गियाग पुनू कलस आसनसविष्णुवर्क धनलि
न समस्तं थापनायादह पिठ पाठा करेडा सग्वन पा ० श्वर्गिचू

नहाव उवाय गुवमलु सिन्धुगस्यं गुवमलु लविष्णुवर्क ॥ समा
धि कल ठा पूजा निमोजन देव पूथि स्नान रुद्रा पुन पूपनिर्गति
न लाहात्रिपक्रा स्नान देव पूजा पिलु पाठ वन बीजा सक रंय
जा पक्षमृग पक्षगन्ध पूषदीपने वय अइतान दलीक्रे पुष्प
न्यास यधमो पा ० चय मलुलथिल स्नानगर्भ शुभडी मनेडी
डीडी भाक सिद्ध तथा गतस्य वृद्धकृण रुद्रक ल्य देव स्वगमने

पाल (यसा पलका ॥ ३ ॥ वृद्धस्य ॥ वृष सिधना ॥ (मनीचन योग
यस्य रुकुम (मोचमषयपदीय ॥ ३ ॥ कि दृगयत्रि पिछ नलदि रुलममः
स अर्धल वीदिनका लवान ॥ ३ ॥ वृद्धस्य तिस्था ॥ वृष दृगयमे गचः
हीखलु पीगपृषज्जम पिमवर्कि (मद्यन ॥ ३ ॥ कि दधिइ च पिछ
नसन्दि रुलगवस अर्धल वीदिन च पीगवमुयर्ग ॥ २ ॥ वृद्धस्य
वृष नील हीखलु वग सिगपृषज्जम दृगपादीय ॥ ३ ॥ कि गुडलका

लाजा नरुग अर्धमगडादा पिछयत्रि रुलगुमाच वीदि कडव धन
स ॥ ४ ॥ मनीचनियुवस्था ॥ वृष गचलस अगुववग नीलयषज्जम अ
र्धलसपदीय ॥ ३ ॥ कि गुडसा समदमाव रुलगुमत्र पिछसासमयवी
दिमास कुरु विमा ॥ १ ॥ वृद्धस्य ॥ वृष दार्कधूप यात्र पात्र गच सर्व
गच नीलयषज्जम वृष तिलनेलपदीय अर्धमोवग मद्य दका
द्वारा रुति ॥ ३ ॥ कि मनीचनियुवस्था मासकलादा रुलगुमने वयर्ग वा वी

सिम्बाग शरपनिखेर्मेसया ॥ ८ ॥ कनीप्रर्धं वाविष्ममनि वूप सर्वगथ
 वूममयपूव्यरुम सुवर्गलयदीप बुकि मूद्रमास हासुजा डवसम
 खकूयीया अर्धको म्रन बोदिकायाग वावस ॥ ९ ॥ कनीप्रर्धं वि
 वमनि वूपकसुगी जीवभुवतसितपेव्यरुम हायहामूसट
 कि दविहविपिनात् मवरायूम अरुगधसुनवेम वरुलकल
 सु विदिमरुग शरपनि सिहासन ॥ १० ॥ नितवगुहयावि वनइया ॥

(नवशरपायुजावि वानदयकम
 (वाकनायुठ ८ यरुगठं
 (पकरसुगकायुठ)
 (कसाभीसुगकायुठ)
 (मइयापाठ)
 (वलोनिधु ८
 (मसंवरु
 (वागवनिफासु नागक १५
 (जभावनवन
 (कविले म्मासयापा
 (शवन पाठ
 (वाइवनो लामा लाकलाम
 (शकपुगाप नाइ मगलाक
 (इ०० गान मोहा निरु यमोन

लीर

यकग डं वज्रवर्ण श्री मूर्ति विष्णु डं वज्रवर्ण श्री मूर्ति विष्णु डं वज्रवर्ण
वज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु
विष्णु मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु
नमो मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु
मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु
मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु
मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु डं धर्मवज्री मूर्ति विष्णु

आम्र मूर्ति विष्णु

ASHA ARCHIVES

2717

[illegible]

अलिखकं सादि ॥ ३८ ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ३९ ॥ दे०
 विनोमस्तुति ॥ ४० ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ४१ ॥ दे०
 वेदिरुवीकृतं ॥ ४२ ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ४३ ॥ दे०
 ब्राह्मणेन मन्त्राया वरुणं ॥ ४४ ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ४५ ॥ दे०
 ननु य एव श्रीमथा ॥ ४६ ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ४७ ॥ दे०
 कुर्याय विसर्ज्य सगुनविय ॥ ४८ ॥ वरुणसंस्तुत्यामलिखिष्यमि वरुणामालिखकं ॥ ४९ ॥ दे०

वानगायमलासाव कातर्यं न माषमदेतमस शय सगुयचन भाउ द्वायक
दूवाययदन ॥ कुमिदकयडा लुसिथानक यथवल्केलेनभाउ द्वायक
लासावनदूकाय थवरथमससंस्तनयाय मगद्विचय ॥ ७ ॥ लालं वगु जातिर
ल कूकम कयुवम लेयनायाय ॥ कृष्ण रं विविय ॥ वसु लाय मडं दिव्य वा
मस्वादागसिचरीपमासि ॥ थनसिचुचय ॥ लुकिवाकन मडं सर्वोरप्रम हसन
स्वादा ॥ निहाविच ॥ ८ ॥ दं नत्सर्ववृद्धा ना येधगुर्क नमस्तु तं यूपमा कं पूरुता
मालव

थीय मकूटय मकूवाकूव डं वडा मत्वदं ॥ भाउ किनिन विचका डं नत ८
डं ८ ॥ वाउ मस्व वा दानिं धाना नूयस ३ न माला वलं विनकं धास्वादा ॥ काय
यक भाग रं दिकाना ॥ तात्रवा मग रुनमाय ॥ ७ ॥ नत ८ ॥ धीरु लयूगाया
नया ॥ रावनास्वानगस्य ॥ धून्यता कवु मरिचं वा विवि कस्व नूपास्वाव
यिलो ॥ नत ८ ॥ ददय म् विजा नूवं तोनालीक वामुं म् लिला म् कनिस्व
जुवनं माला ॥ तस्मान्मदा कथ धीरु लं लीता विचय ॥ पायादि नीला ८ ३

न लोहप्रियका यथैवदा नयूनां च लोहादन सुति॥ राहातसु नानव
 तसमावेतिहाव राहा तसत्रिया॥ मथापदय॥ ४४५॥ नाथ गतिमडाह
 नानुपयुक्तकरी गृहीत्वायातिनायिलि वृद्धवृत्त्ययुक्तिर्हिना यनसर्वेन
 सत्त्वेन यत्नपायो न सत्त्वेन ननसर्वेनमेनाथ कामात्तयत्रियेन
 भमसत्त्वेनदायक मानवा मगहनभाय॥ ४४६॥ सर्वेवृद्धवृत्तमलि महमे
 कूटपुति ४४६॥ अत्रिनीनगाय मनु॥ ४४७॥ वडाहासमे नूस्मवेदं ॥ दासा॥

लासावन इदं वा नयव वा नदायरा वंकलिस चाकू लिस थथीभाय स
 तनसहितन स्वलिवाकत नचा कवइवा॥ थवर थसंखन ४४८॥ यवरा
 संहर्तन वादावनरुय॥ वनूजायुयक॥ ४४९॥ दिवानसमाविष्ठा नपुनैरासा
 थमकुन छय॥ गता ४५०॥ अत्रिहावना॥ अकाजसंसिद्धि कमितपुतिमादिकं धा
 लावडुंजीऊ कायस्वादा॥ अरुगियायरा याययक इनी॥ थनदछवलिधि
 य॥ पावनयावकुदाय सयनविस्मं धत्रिव गायवरा थनविकामावीपडा

थाकादिमल्लुलधिरकं स्वातगानं पु. लूयाय विवर्तनं ॥ त्रैलोक्यं द
 र्शय सगुनं श्रीगिर्विद कोमायुजा च्छायाम् ॥ अथ ॥ दियाराय इति ॥
 ५७ नमायुजायानकस गुनमल्लुल गिरमावि केलहायाभायवय
 जा पिवसमदु भयवयं थनवसमाय क्रमसीस्यं इ कायमस्त्रिकसमान
 गुनमल्लुलदतक विवर्तनं ॥ स्वातं दूवकं शवना लादात्रिको सस्य
 यत्रिमिमानताय वरगतमाय पिरित मया शोत्रक य नीतीनसस्यक

॥ ५८ ॥

॥ मायवद्वनमस्य ॥ भाठ दूयकमाक मिदाथयुजा ॥ सखायक ॥ ५९ सः
 श्रीवत्रसविष्णुवर्न सर्वाज्ञना वत्राद्यदय दं स्वादा ॥ अथ मकुपदयं थन
 दसर्वन ॥ तग ५७ वमसुद्वेवदिकत्र ला स्वादा ॥ अथ मकुपदयं थन
 आदयत्रोयाव पिवमसदतनय ॥ गमथा ॥ यमदीलं सतिरुतसेस्य
 जिनयुद्धं सकुतुनाच ववदासम सापिगत ॥ श्रीव त्रसमकुवजिनस्य
 निष्ठावविगतस्य गमंगलं रुवकुतुय वसा शिवक ॥ लासात्रदकायथः

वथायसमानायेक गुरुवियः। वस्तु ह्य। यामाउसननुदायीय। उभयाव
 नना। उं वडा मिलेकुरुष। स्वादा॥ नू वगततिवकाउं सवीरवेनरुखन
 स्वादा॥ म्मरवताउं कात्रनपंखुद्वं सकुटीनिष्ठाया॥ उं दंतसुवेवृद्धा
 नां गुं धारु कं नतम्बु गं। यूप्याकं पूजनाथीय। सकुटपयं कूचीनरुव
 उं सवेवृद्ध वृथामणिमदासकयगिह स्वादा॥ उं वडा वलगां॥ चोकरुनि
 उं वडा धमगया ग्रीहं॥ उं सलवडीहं॥ उं वलवडीयां॥ उं धमवडीः

दीगाउं कर्मवडी म्म॥ धनकामात्रीयूजा सखनविय स्वातमाना। स्वातग
 न वेत्तयूजा असिर्वाय विषर्जन॥ दवडापयकुच्छाया॥ कामात्रीया
 म्मरुस॥ ॥ ॐ निवसुखायां याविधिसमाफ॥ ॐ ॥ ॐ ॥ ॐ ॥
 (दानस्त्रयनयाविधान॥ दगुत्री कलसाधिवामन अग्नि स्वाधन॥ स्वसिधायं
 केन। हंकात्रजं द्विगुजं विष्वा ऊजं सूर्याय वि श्रान्तिरयदस्त्वं वक्य
 म्माकृष्णधर्म मूनगमसमाधिसुखवं गिलोकयुसाटकं महाकाशजनेवि

(दानस्त्रयनयाविधान॥

रागा॥ श्राक र्वेस॥ याद्यादि॥ निगड्डन वडा गात्रवा मगरुनगीय श्रुति
षक र्वेसामृग पशु गव्य दिक्लि॥ पुर्वम कसम कसम द्राक्षव त्रयग
नमाला पोकापड द्यायाव वेशपहावपूजा॥ य॥ ४॥ यादन गात्रवा मगरु
॥ कुमीहाथपूजा॥ र्वेसमृग कापडावगय धमकुनजापयाय॥ ४॥ पुलाक
पुलाटक महाकाटगाडहंरु द्वाहा॥ पुनिष्ठाधिदाव सवृटतयीयकः
वडाय॥ ४॥ कनक सरुतनया॥ वरुद्वय॥ यवीयहावपूजा हागाहन॥

दाक मृगव वलिनेवय वेल्लायवावयजा हागाहन॥ द्वाव रुद्रापतलि
व श्रुतिरावना॥ तन॥ ४॥ मृ द्वादि भित नीव पीतानल स्यामोलावृष्ट
मृगम जिननिवसन निगुमल हंरु कडु हाहाय ववदाक कुल्लीकनम
वक्रसुगविष्ममृवधेन कसुनरु॥ सूर्यासन मृपुर् महातापभागीयः
रावयगा॥ श्राक र्वेस॥ दी॥ ४॥ गापधम अयखादा॥ पशुपहावपूजा दव
गादति॥ ४॥ दकुलाय॥ ४॥ ऊजमानस श्रुतिवक श्रुतिवद स्यादति वि

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

[illegible]

गन्धयम्भर आदिन च्छय र्वादिनयक सिन्धुनतविष्णुवज्रयायना सुनातला
 हाग्निरक्षागयथावहावयुजा ॥ ० ॥ धनमृत्तिलवनागयप्रसूयदिविय
 मारुतवर्त्तिकुमुकुज्यामोक्षीदलुकलुकाष्टमिस्रान्नगदकावुक
 अमृतानिर्विकारवयुगमृक्काकाष्टादिविषिद्रुयाग ॥ ० ॥ मनु॥ डंमृ
 मृगानिथिखाहा ॥ ॥ नमविमार्वावगममावायुष्यमालागडं वज्र
 गजालगर्भगर्भगडं वज्रवक्रदं ॥ मनु॥ ध ॥ अथमो धिदात्र तायमृ

[illegible][illegible]

[illegible]

ॐ लङ्किं वडकायागुमगुमगु कुरुकल मदायकालथा (अथविद्वं
रुद्ररुद्रादाम ७ ४६६ यजुगुलीयवनी ॥ थीसिमाद्ययसुतयसुतुः
प्रा॥ ६६ ॥ रथीमदासम्वराय पवडाकालथा मवान् कायवाकविकुवः
ऊ सर्वविनय थागिनीरुवुं कालि रात्रिध्य कर्त्तृकासुर्थ (अथलि गालु
वकु मदाकात्र रुक्मिणदलि गाद्व ४६६ कं वं सफ गिरुजा (अ सफाद
अगिनावन मदा रुगायव (अ सट म्दाय गल सल (अट म्कु मालि

मोकां छेव कयुवनीयु ला नवयु सर्वशोखा समा युक्तं मा रु सिद्धि
अथदिमं सर्वं हृत्तनमदीह उगदधय मा दकं विनोमूनिवकुन
वीमहासचल नभा मुन याक विध्यमहा हर्त सर्वमूनिमदा सिनव
याकाध महाकदमदा सचन नमा मि ॥ धूप ककुन कयुवनी
कीन यदु स्थानय कयुवनी सकिरसि ताद कोया धकि इ वा ॥
६ नमः श्रीवक्तु सत्याय ॥ गुरुस्य गुरुमलुल ॥ दगुनिकलेन नाभा कुरु

नाम शिष्यलसाखंडकाय ॥ स्वस्तिकसमान गुरुमलुल वलिदीप्य कलगा
रुन विठ्ठल ॥ शिष्यलसाखंडकाय कृत्याव ॥ अथ यम ॥ ताधि वक्तु
युद्धाना यथाद सामसा मद्र समाधिगतेनोथय स्ववजा ॥ यद दादिमं ॥
शिष्यलसाखंडकाय ॥ नरुसासित्ति ताद्य दनक मयात्रे ननु सूर्येडयविष्णुनि
यवक्तुध वनूपविशया ॥ अकषेन वजा क ॥ दिना केन लादात्रि
नरा ॥ यथगुरु वियम क ॥ वादिकन वमु ज्ञाय ॥ रावना ॥ गदनसुह

द्वौ जमयुर्वेलातिनादि बहिनरुथा गतानि द्यादविभ्वस्यैष्टीनातिना
 नामाशिवकोथं वृद्धा नामाशिवकोथं उगर्हनाय वजीना गुल्फकथा
 यथादहं तथादयद्यमसादिभक्त्या दूयकूनविचयकंगना रावनाभवेय
 तथा गगंष्टयुक्ता समायनेऽमला गगनद्विचयवेगयनेन द्वाप्रनाक
 तिष्ठ्य वज्रमात्रेन निवध्यतदये धर्मीयममे मूखनपुत्राणि तं तिष्ठ्य
 मटिगिष्ठ्य गानकं हं वज्रजात सपुत्रः शोभ्यः शर्वः श्रीसम्वत्स

शर्वं लूनसंसारिणं नृत्तिविशेषं यत्तु ४२ उक्तं सूत्रात् ४३ आदिमं किं ४४ यथा
 विधृत्य गगनमायूर्यो ह्येते ४५ बाला वनादि संहिते ४६ ७ ध्वजपटाकादिव
 सुखादिनां गीत नृत्यपथा कृत्वा सादि वृत्तिरिति ४७ यत्राहिसूनया वज्रित
 वाधिविलसक पुष्पकान्तकल ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००
 मानं यो गीतं गतीयमानं सकल गीतं शक्यं ॥ कलेषु बद्धेन हायथा
 गमथा ॥ यत्तु सकलं सकलं सत्तु हृदि स्थितं सत्तु सत्तु कस्य त्वत्तु

कृत्वाधियस्या॥ निष्ठासत्त्वजनकस्यमदासुखस्यतत्सद्विलम्बितुतप्रसादि
षका॥ ॥ पाठद्वयवचनकीर्तनाडंमदासुखवज्रसत्त्वादिषकनत्वाम
लिषिष्यमि, सर्वतथागताधियर्जनदृष्टावत्संन्यतनदायगुणस्य॥
अलिषकमदावज्र, जेष्ठागुणकनमस्तु॥ ददामि सर्ववद्वानां शिषुःकलय
संन्यत॥ माउधायन॥ उं वज्रा दकारिषिष्यमिहं सन्तस्तमदं मदासुख
समापयौतव॥ ६॥ निष्ठदकारिषक॥ ७॥ अथवत्ता॥ वाधिवज्रम

स्यादि॥ श्रवना॥ निष्ठासत्त्वजनकस्यमदासुखस्यतत्सद्विलम्बितुतप्रसादि
थागतधिविलिःकृष्णीरलिषिष्यमिहं सन्तस्तमदं मदासुख
लगीनरावयगु॥ वत्तसत्त्ववत्त॥ अलिषकमदावज्र, जेष्ठागुणकनमस्तु
नंयुष्माकंयुजनाथाय सकृदप्येकं वद्वानां॥ उं वज्रा दकारिषिष्यमिहं सन्तस्तमदं मदासुख
विषयं॥ उं वज्रा वज्रीनीमृतिविषयं॥ उं वत्त वज्रीनीमृतिविषयं॥ उं वज्रा
वत्त वज्रीनीमृतिविषयं॥ उं वज्रा वज्रीनीमृतिविषयं॥ उं वज्रा वज्रीनीमृतिविषयं॥